ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानी संग्रह “छतरी” में दलित चेतना

एन.बी.एन.वी. गणपति राव,

शोधार्थी, पी.आर. गवर्नमेंट कॉलेज,

आदिकवि नन्नय विश्वविद्यालय,काकिनाडा,

राजमंड्री, आँध्रप्रदेश,

बीजशब्द: चेतना, संघर्ष, पीड़ा, समरसता

ओमप्रकाश वाल्मीकि दलित साहित्य के एक महत्वपूर्ण हस्ताक्षर हैं और उन्होंने कई कहानी संग्रह लिखे हैं, जिनमें दलित जीवन के संघर्ष, पीड़ा और यथार्थ का मार्मिक चित्रण मिलता है। ओमप्रकाश वाल्मीकि दलित साहित्य के एक ऐसे स्तंभ हैं, जिन्होंने अपनी कहानियों के माध्यम से दलित समाज के अनछुए पहलुओं, उनकी पीड़ाओं, संघर्षों और आकांक्षाओं को सशक्त ढंग से अभिव्यक्त किया। उनके कहानी संग्रह दलित जीवन के यथार्थ के जीवंत दस्तावेज हैं। उनके प्रमुख कहानी संग्रह इस प्रकार हैं:

* सलाम (2000)

* घुसपैठिए (2004)

* छतरी (2013)

* अम्मा एंड अदर स्टोरीज (अम्मा और अन्य कहानियाँ)

ओमप्रकाश वाल्मीकि का कहानी संग्रह ‘छतरी’ (2013) उनकी अन्य कहानियों की तरह ही दलित जीवन के यथार्थ और संघर्षों को सामने लाता है, लेकिन इसमें सामाजिक समरसता और मानवीय मूल्यों को स्थापित करने का भी विशेष प्रयास किया गया है।

इस संग्रह की कुछ चर्चित कहानियाँ इस प्रकार हैं:

'छतरी':

ओमप्रकाश वाल्मीकि के कहानी संग्रह 'छतरी' की शीर्षक कहानी 'छतरी' एक मार्मिक और प्रतीकात्मक रचना है जो मानवीय संवेदना, सांप्रदायिक सद्भाव और दलितों के प्रति समाज के बदलते (या न बदलते) दृष्टिकोण को सूक्ष्मता से दर्शाती है।

कहानी का मुख्य पात्र एक दलित बच्चा है, जिसे स्कूल जाते समय या बाजार जाते समय बारिश से बचने के लिए एक छतरी की ज़रूरत होती है। यह छतरी मात्र एक वस्तु नहीं, बल्कि उसके लिए सुरक्षा, सम्मान और बराबरी का प्रतीक बन जाती है। बच्चा देखता है कि कैसे सवर्ण बच्चे या अन्य लोग आसानी से छतरियों का उपयोग करते हैं, जबकि उसके लिए यह एक विलासिता या दुर्लभ वस्तु है।

कहानी इस बच्चे की छतरी पाने की अभिलाषा और उसके संघर्ष को चित्रित करती है। यह इस बात पर भी प्रकाश डालती है कि कैसे समाज में एक छोटी सी वस्तु भी जातिगत भेदभाव और असमानता का प्रतीक बन सकती है। बारिश या धूप से बचने के लिए एक साधारण सी छतरी भी एक दलित बच्चे के लिए कितनी मुश्किल से मिलती है या उसके लिए कितनी बड़ी उपलब्धि होती है।

'छतरी' केवल भौतिक सुरक्षा की बात नहीं करती, बल्कि सामाजिक सुरक्षा और समानता की ओर भी इशारा करती है। यह बताती है कि दलितों को समाज में बराबरी का दर्जा और सम्मान मिलना कितना आवश्यक है, ताकि वे भी आम लोगों की तरह जीवन जी सकें, बिना किसी भेदभाव या हीन भावना के। कहानी एक प्रतीकात्मक माध्यम से यह संदेश देती है कि जब तक समाज में सभी के लिए समान अवसर और सुविधाएं उपलब्ध नहीं होंगी, तब तक वास्तविक सामाजिक समरसता स्थापित नहीं हो पाएगी।

'छतरी' एक दलित बच्चे की साधारण सी छतरी पाने की इच्छा के माध्यम से जातिगत भेदभाव, असमानता और मानवीय गरिमा के मुद्दों को उठाती है। यह कहानी हमें सोचने पर

मजबूर करती है कि समाज में अभी भी कितनी गहरी खाई है और हमें सभी के लिए समानता और सम्मान सुनिश्चित करने के लिए कितना आगे बढ़ना है।

'चिड़ीमार':

ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानी 'चिड़ीमार' उनके अन्य लेखन की तरह ही दलित जीवन के यथार्थ, शोषण और उससे उपजी पीड़ा को गहनता से प्रस्तुत करती है। यह कहानी प्रतीकात्मक रूप से समाज के वंचित और शोषित वर्ग की स्थिति को दर्शाती है, जिन्हें ताकतवर लोग अपनी इच्छा अनुसार इस्तेमाल करते और कुचलते रहते हैं, ठीक वैसे ही जैसे एक चिड़ीमार पक्षियों का शिकार करता है।

कहानी का केंद्रीय विषय है दलितों का लगातार होने वाला शोषण और उनकी बेबसी। 'चिड़ीमार' यहाँ उस शोषक वर्ग का प्रतीक है जो दलितों (जिन्हें कहानी में चिड़ियों के रूप में देखा जा सकता है) को अपने स्वार्थ के लिए फंसाता है, उनका इस्तेमाल करता है और फिर उन्हें त्याग देता है या नष्ट कर देता है। यह शोषण आर्थिक, सामाजिक और मानसिक, हर स्तर पर होता है। दलितों को उनके काम के बदले कम मजदूरी मिलती है, उन्हें सामाजिक रूप से तिरस्कृत किया जाता है और उनकी मानवीय गरिमा का हनन किया जाता है।

कहानी में वाल्मीकि जी ने दिखाया है कि कैसे दलित समाज अपनी परिस्थितियों के कारण एक जाल में फंसा हुआ महसूस करता है। वे अपनी स्थिति से निकलने का प्रयास करते हैं, लेकिन शोषक वर्ग की मजबूत पकड़ उन्हें ऐसा करने से रोकती है। 'चिड़ीमार' कहानी इस बात पर भी जोर देती है कि यह शोषण केवल व्यक्तिगत स्तर पर नहीं, बल्कि एक संगठित सामाजिक व्यवस्था के तहत होता है, जिसमें ताकतवर लोग हमेशा कमजोरों को दबाने के लिए तैयार रहते हैं।

इसमें दलितों के जीवन की अस्थिरता और अनिश्चितता का भी चित्रण है। जिस प्रकार पक्षी चिड़ीमार के जाल से कभी भी पकड़े जा सकते हैं, उसी प्रकार दलितों का जीवन भी हमेशा असुरक्षा और खतरे में रहता है। उनकी मेहनत का फल उन्हें कभी नहीं मिलता और वे एक दुष्चक्र में फंसे रहते हैं।

कुल मिलाकर, 'चिड़ीमार' कहानी ओमप्रकाश वाल्मीकि की दलित चेतना का एक और महत्वपूर्ण उदाहरण है, जो शोषण के विभिन्न रूपों, दलितों की बेबसी और उनसे मुक्ति की आवश्यकता पर विचार करने के लिए प्रेरित करती है। यह हमें यह सोचने पर मजबूर करती है कि हमारे समाज में आज भी कितने 'चिड़ीमार' मौजूद हैं और कितने लोग अभी भी उनके जाल में फंसे हुए हैं।

"साल का पेड़":

ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानी "साल का पेड़" ग्रामीण भारत में दलितों के साथ होने वाले भेदभाव, शोषण और उत्पीड़न को मार्मिक ढंग से चित्रित करती है। यह कहानी एक साल के पेड़ के इर्द-गिर्द घूमती है, जो कहानी में एक महत्वपूर्ण प्रतीक के रूप में सामने आता है।

कहानी का मुख्य पात्र एक दलित व्यक्ति है जो उच्च जाति के लोगों द्वारा किए जा रहे अन्याय और शोषण का सामना करता है। साल का पेड़ इस दलित व्यक्ति के जीवन का एक अहम हिस्सा है, जो उसे आश्रय, सुकून और थोड़ी राहत देता है। यह पेड़ दलित समाज के लिए उम्मीद और धैर्य का भी प्रतीक बन जाता है, जो सदियों से उत्पीड़न सहते हुए भी टिका हुआ है।

कहानी दर्शाती है कि कैसे दलितों को अपनी मूलभूत आवश्यकताओं के लिए भी संघर्ष करना पड़ता है और कैसे उन्हें हर कदम पर जातिगत भेदभाव का सामना करना पड़ता है। साल के पेड़ पर दलित समुदाय का अधिकार न होना और उस पर उच्च जातियों का वर्चस्व, संसाधनों पर दलितों के अधिकार से वंचित होने का प्रतीक है।

वाल्मीकि इस कहानी के माध्यम से यह दर्शाते हैं कि दलितों के जीवन में गरीबी और शोषण इतनी गहराई तक समाया हुआ है कि वे उससे चाहकर भी आसानी से बाहर नहीं निकल पाते। साल का पेड़, जो बाहर से मजबूत और स्थिर दिखता है, अंदर से खोखला हो रहा होता है - यह दलित समाज की आंतरिक पीड़ा और क्षय को भी दर्शाता है।

अंत में, कहानी दलितों के अपमान और बेबसी को उजागर करती है, लेकिन साथ ही यह प्रतिरोध की एक दबी हुई चिंगारी को भी महसूस कराती है। यह कहानी दलित साहित्य की एक

महत्वपूर्ण कृति है जो समाज में व्याप्त जातिवाद की कड़वी सच्चाई को उजागर करती है और दलितों के जीवन के दर्द को गहनता से प्रस्तुत करती है।

"बपतिस्मा":

ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानी "बपतिस्मा" दलित समाज के भीतर गहरे तक पैठे जातिगत भेदभाव और छुआछूत की मार्मिक और यथार्थवादी तस्वीर प्रस्तुत करती है। यह कहानी दर्शाती है कि कैसे तथाकथित उच्च जातियों द्वारा दलितों का सामाजिक और मानसिक उत्पीड़न उन्हें तोड़ देता है।

कहानी का मुख्य पात्र एक दलित बच्चा है जो गाँव के कुएँ से पानी भरने जाता है। यह कुआँ गाँव के सामाजिक विभाजन और जातिगत श्रेष्ठता का प्रतीक है, जहाँ दलितों को पानी लेने की अनुमति नहीं होती है या उन्हें विशेष शर्तों पर ही पानी मिलता है। बच्चे का पानी लेने का अनुभव उसके लिए "बपतिस्मा" (दीक्षा/शुद्धिकरण) जैसा है, लेकिन यह कोई धार्मिक शुद्धिकरण नहीं, बल्कि सामाजिक अपमान और अलगाव की दीक्षा है।

कहानी में बच्चा न केवल शारीरिक रूप से बल्कि मानसिक रूप से भी प्रताड़ित होता है। उसे पानी लेने के लिए घंटों इंतजार करना पड़ता है और फिर भी उसे अपमानित किया जाता है। यह अनुभव उसके बाल मन पर गहरा प्रभाव डालता है और उसे अपनी जातिगत पहचान और उसके साथ जुड़ी हीनता का अहसास कराता है। "बपतिस्मा" शब्द यहाँ व्यंग्यात्मक रूप से इस्तेमाल किया गया है, क्योंकि यह शुद्धिकरण के बजाय भेदभाव और छुआछूत की कड़वी सच्चाई से परिचय कराता है।

वाल्मीकि इस कहानी के माध्यम से यह दर्शाते हैं कि जातिवाद एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में कैसे हस्तांतरित होता है और कैसे बच्चे बचपन से ही इस भेदभाव को आत्मसात कर लेते हैं। यह कहानी दलितों के जीवन में व्याप्त दैनिक अपमान, तिरस्कार और मानवीय गरिमा के हनन को उजागर करती है। यह केवल पानी के एक कुएँ की कहानी नहीं, बल्कि सदियों से चली आ रही सामाजिक असमानता और मानवीय संवेदना के अभाव की कहानी है।

“बपतिस्मा” ओमप्रकाश वाल्मीकि की उन महत्वपूर्ण कहानियों में से एक है जो दलित जीवन के अनुभवों को सशक्त और संवेदनात्मक तरीके से पाठक के सामने रखती है, जिससे समाज में व्याप्त जातिगत भेदभाव पर सोचने पर मजबूर होना पड़ता है।

“बंधुआ लोकतंत्र”: भारतीय समाज में लोकतंत्र के नाम पर दलितों के साथ होने वाले छल, शोषण और बंधुआ मजदूरी की वास्तविकता को उजागर करती है। यह कहानी दिखाती है कि कैसे, भले ही देश स्वतंत्र हो गया हो और लोकतंत्र स्थापित हो गया हो, लेकिन दलितों के लिए यह केवल एक दिखावा मात्र है, क्योंकि वे आज भी सदियों पुरानी जातीय व्यवस्था के बंधुआ बने हुए हैं।

कहानी का मुख्य विषय यह है कि आजादी के दशकों बाद भी दलितों के मौलिक अधिकार और स्वतंत्रताएं हकीकत में उन्हें नहीं मिल पाई हैं। वे आज भी सामाजिक और आर्थिक रूप से सवर्णों के बंधुआ हैं। उन्हें उनके पुश्तैनी काम करने पर मजबूर किया जाता है, शिक्षा और संसाधनों से वंचित रखा जाता है, और उनकी मेहनत का पूरा लाभ दूसरों द्वारा हड़प लिया जाता है।

“बंधुआ लोकतंत्र” यह सवाल उठाती है कि क्या यह सचमुच लोकतंत्र है, जब समाज का एक बड़ा वर्ग आज भी गुलामी की बेड़ियों में जकड़ा हुआ है? कहानी में दलित पात्रों को अक्सर अपनी बात रखने या अपने अधिकारों के लिए लड़ने का मौका नहीं मिलता। उन्हें चुपचाप शोषण सहने के लिए मजबूर किया जाता है, क्योंकि अगर वे विरोध करते हैं तो उन्हें और भी भयानक परिणाम भुगतने पड़ते हैं।

वाल्मीकि इस कहानी के माध्यम से यह संदेश देते हैं कि भारतीय लोकतंत्र अधूरा और खोखला है जब तक कि समाज के सबसे निचले पायदान पर खड़े दलितों को सच्ची स्वतंत्रता और समानता नहीं मिल जाती। यह कहानी एक कड़वी सच्चाई को सामने लाती है कि कैसे राजनीतिक स्वतंत्रता के बावजूद सामाजिक और आर्थिक गुलामी बनी हुई है, और कैसे दलित आज भी ‘बंधुआ’ मजदूर की तरह जीवन जीने को मजबूर हैं, भले ही उन्हें ‘स्वतंत्र नागरिक’ कहा जाता हो।

कुल मिलाकर, “बंधुआ लोकतंत्र” ओमप्रकाश वाल्मीकि की उन कहानियों में से है जो दलितों के दमन और उनके अधिकारों के हनन पर तीखा प्रहार करती है, और यह प्रश्न उठाती है कि जिस समाज में एक वर्ग अभी भी बंधुआ है, उसे कैसे ‘लोकतांत्रिक’ कहा जा सकता है।

'छतरी' ओमप्रकाश वाल्मीकि का एक महत्वपूर्ण कहानी संग्रह है, जिसका प्रकाशन उनके निधन से कुछ समय पूर्व हुआ था। इस संग्रह की कहानियों में न केवल दलित जीवन के यथार्थ का चित्रण है, बल्कि इसमें सामाजिक समरसता और सांप्रदायिक सद्भाव की बात भी की गई है।

इस संग्रह की कहानियाँ समाज में व्याप्त विभाजनकारी ताकतों के विरुद्ध खड़ी होती हैं और मानवीय मूल्यों, एकता तथा भाईचारे को बढ़ावा देने का संदेश देती हैं। यह संग्रह दर्शाता है कि कैसे छोटी-छोटी घटनाएँ या वस्तुएँ (जैसे 'छतरी') भी समाज में एकता का प्रतीक बन सकती हैं और लोगों को एक-दूसरे के करीब ला सकती हैं। इसमें दलितों के साथ-साथ अन्य अल्पसंख्यक समुदायों की समस्याओं और उनके बीच के संबंधों को भी दिखाया जा सकता है।

ओमप्रकाश वाल्मीकि के कहानी संग्रह दलित साहित्य के लिए एक अमूल्य धरोहर हैं, जो हमें भारतीय समाज के उस हिस्से से रूबरू कराते हैं जिसकी आवाज़ अक्सर अनसुनी रह जाती है।

संदर्भग्रंथ सूची:

1.ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानी संग्रह: छतरी

2. डॉ. नरेन्द्र वाल्मीकि – ओमप्रकाश वाल्मीकि : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

3. डॉ. गोविन्द पूरी – दलित साहित्यकार ओमप्रकाश वाल्मीकि

4. जयप्रकाश कर्दम – ओमप्रकाश वाल्मीकिः व्यक्ति, विचारक और सृजक

5. प्रियांका चौहान – ओमप्रकाश वाल्मीकि का कथा साहित्य

6. अजित सिंह – ओमप्रकाश वाल्मीकि का साहित्यिक व सामाजिक अवदान

7. डॉ. पूरण चंद -दलित स्वाभिमान और ओमप्रकाश वाल्मीकि की 'सलाम'

8. डॉ जोगिन्द्र कुमार संधू – दलित चेतना के संदर्भ में कथाकार ओमप्रकाश वाल्मीकि